हरियाली एकादशी – 25 जुलाई 2026
कामदा एकादशी – 9 अगस्त 2026

शुक्र साधना

सुखीकान्त व पुः श्रेष्ठ सुलोचना भृगु सुतः
कान्यकर्ता कफाधिक्या निलात्मा वक्रमूर्धजः

शुक्र साधना से साधक सुन्दर मुख, कान्ति युक्त शरीर, बड़े-बड़े नेत्र तथा सभी प्रकार के रोग-शोक से मुक्त और सौन्दर्य प्रधान मन का व्यक्तित्व प्राप्त करता है।

शुक्र को जीवन के सुखों का कारक ग्रह माना गया है। शुक्र की चमक एवं शान अन्य ग्रहों से अलग है, निराली है। इसी सुन्दरता के लिए शुक्र जाना जाता है। शुक्र की साधना से शुक्र को बलवान बनाकर उस वृक्ष समान बनाया जाता है जो फलों, फूलों से भरा हुआ छायादार पूर्णतः हराभरा हो। वास्तव में शुक्र की शक्ति जीवन में सौन्दर्य, तेज, आकर्षण, सम्मोहन, माधुर्य, ऐश्वर्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व, ऐश्वर्य, दाम्पत्य सुख जैसे आधारभूत गुणों को प्रदान करती है।

शुक्र ग्रह जीवन को जीवन्त बनाने वाला ग्रह है। जिसके प्रभाव से जीवन में सृजन शक्ति का विकास होता है। प्रबल शुक्र की शक्ति व्यक्ति में कला, ज्ञान-विज्ञान, वाणी-व्यवहार से अलंकृत कर प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करती है। शुक्र ग्रह की साधना शुक्र की कृपा प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

शुक्र साधना **किसी भी शुभ मुहूर्त अथवा किसी भी शुक्रवार** को सम्पन्न की जा सकती है। **आगे लाने वाले दिनों में 25 जुलाई 2026 हरियाली एकादशी और 9 अगस्त 2026 कामदा एकादशी शुक्र साधना सम्पन्न कर शुक्र की कृपा प्राप्त करने के विशिष्ट अवसर है।** इन मुहूर्तों में शुक्र की साधना अवश्य सम्पन्न करें। **जिस साधकों के शुक्र की महादशा चल रही हो उन्हें तो निश्चित रूप से अपनी 20 वर्ष की महादशा प्रतिवर्ष कम से कम 1 बार तो शुक्र साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिये तथा सद्गुरुदेव से 'शुक्र दीक्षा' ग्रहण करनी चाहिये।**

शुक्र की साधना स्त्री-पुरुष दोनों के लिये ही आवश्यक है और बिना किसी भेद के इस साधना को सम्पन्न करना चाहिये। शुक्र तो सदैव यौवन, कांति, ऐश्वर्य, विलास, पुरुषों में वीर्य और स्त्रियों में रज का स्वरूप है। रज और वीर्य के मिलन से ही सृष्टि में सृजन होता है।

सृजन से ही सृष्टि में भोग, विलास, वाणी, गायन, नृत्य, धन-धान्य, ऐश्वर्य, आभा, सम्मोहन, उत्साह प्रकट होते है।

भौतिक जीवन में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये उपरोक्त गुण आवश्यक है। इन गुणों को पाकर पर अपने भौतिक जीवन की यात्रा आनन्द और उत्साह से सम्पन्न करता है। इसलिये शुक्र को उल्लास का स्वरूप कहा जाता है और जिस प्रकार रत्नों में हीरा सबसे अधिक बहुमूल्य होता है उसी प्रकार ग्रहों में शुक्र सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला ग्रह होता है।

शुक्र साधना के लाभ

1. व्यक्ति के स्वास्थ्य और उसकी आयु (जरा, बुढ़ापा) पर शुक्र का प्रभाव होता है और शुक्र की कृपा से ही जीवन में कोई रस, उमंग, उत्साह परीलक्षित होते है।
2. व्यवहार में शिष्टाचार, साज-सज्जा, पोशाक में विशिष्टता - यह शुक्र की कृपा से ही संभव है।
3. उत्साह, उमंग और कार्य में तल्लीनता, व्यवहार में अभिरुचि - यह सब शुक्र की देन है।
4. महिलाओं-पुरुषों में सौन्दर्य-निखार, आकर्षण-वशीकरण-सम्मोहन शुक्र से प्रभावित होते है।
5. विवाह के उपरान्त वैवाहिक जीवन की सफलता का आधार भी शुक्र ही है।
6. मनोनुकूल विवाह शुक्र की कृपा से ही होते है।
7. विवाह में बाधा अथवा विवाह की बात-चीत बार-बार असफल हो रही हो और शादी नहीं हो पा रही हो, तो शुक्र को प्रबल करना आवश्यक है।
8. संतान प्राप्ति में विलम्ब हो रहा हो अथवा बाधा आ रही हो तो शुक्र कृपा आवश्यक है।
9. **अक्षुण्ण यौवन और दुर्दान्त पौरुष दोनों के लिए शुक्र ही आधार हैं।**
10. अर्थ प्राप्ति में, व्यापार में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर लक्ष्मीपति अथवा विश्व प्रसिद्ध अर्थ धनपति, संग्रह कर्ता बनाने में शुक्र प्रभाव डालता है।
11. वाणी में सम्मोहन और कांतिहीन चेहरे को कांतिमय बनाने तथा शरीर को सुडौल बनाने के लिए भी शुक्र प्रभाव डालते है।

अतः साधकों को पूर्ण पौरुष और पूर्ण सौन्दर्य प्राप्त करने के लिए अनंग साधना, कामदेव रति साधना, अप्सरा साधना के साथ ही शुक्र सिद्धि हेतु 'प्रबल शुक्र साधना' सम्पन्न करनी चाहिये और सद्गुरुदेव से शुक्र दीक्षा भी ग्रहण करनी चाहिये।

धर्म की भाषा में कहें तो शुक्र का शुभ होना चार पुरुषार्थ में से एक 'काम' को पाने में अहम भूमिका निभाता है। यही कारण है कि शुक्र की प्रधानता होने से पुरुषों में तेजस्वीता और स्त्रियों में माधुर्य, कोमलता, आकर्षण व्याप्त होता है। सृजनात्मक शक्ति का से परिपूर्ण शुक्र पुरुषों में वीर्य और स्त्रीयों में रज की पूर्णता करता है। शुक्र की शक्ति के अभाव में रज और वीर्य विकार जातक को ओजहीन बना देते है।

शुक्र जीवन में प्रेम और धन दोनों चीजें प्रदान करते हैं और जीवन में सुख-सुविधाओं की बरसात करते हैं। लक्ष्मीवान, ऐश्वर्यवान व्यक्ति के व्यक्तित्व की आभा ही अलग होती है। ऐसी आभा केवल और केवल शुक्र साधना से ही संभव है।

साधना सामग्री - साधक को इस साधना में स्वयं तीसा यंत्र की प्राणप्रतिष्ठा क्रिया करनी पड़ती है। साथ ही तीन सामग्री आवश्यक है - **'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त शुक्र यंत्र'**, **'शुक्र आकर्षण मुद्रिका'** और **'श्वेत हकीक माला'**। इसमें शुक्र आकर्षण मुद्रिका परम प्रभावशाली होती है।

शुक्र साधना विधान

शुक्र साधना को प्रातः सूर्यादय के समय अथवा रात्रि के प्रथम प्रहर में सम्पन्न करना चाहिये। साधना वाले दिन साधक स्नानकर, स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुख कर सफेद रंग के आसन पर बैठें। अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें और साधना में सफलता हेतु **'निखिल साधना विधान'** अनुसार गुरु पूजन सम्पन्न कर, गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् शुक्र की मूल साधना-पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें -

गुरु पूजन के पश्चात् साधक एक सफेद कागज पर चन्दन से निम्न प्रकार के **तीसा यंत्र** का अंकन कर लें। अंकित यंत्र को गुरु चित्र के सम्मुख स्थापित कर कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से संक्षिप्त पूजन कर लें।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शुक्र साधना में नारियल के तेल अथवा तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। दीपक ऐसा होना चाहिए कि सम्पूर्ण मंत्र जप तक प्रज्वलित रहे। दीपक के तेल में चन्दन भी मिला देना चाहिये।

दीपक प्रज्वलित करने के पश्चात् बाजोट पर एक बड़ी थाली में अक्षत से एक निम्न प्रकार का तारा चक्र (✡) बनाएं। अक्षत के उस आसन पर निम्न मंत्र बोलते हुए **मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठित 'शुक्र यंत्र'** को स्थापित करें –

शुक्र स्थापन मंत्र

ह्रीं हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारम् भार्गवं प्रजमाम्यहम्॥
ॐ भूभुर्वः स्वः शुक्रः इहागच्छ इहतिष्ठः।
शुक्राय नमः।

इसके बाद **'शुक्र आकर्षण मुद्रिका'** को दाहिने हाथ की मुट्ठी में बंद कर शुक्र का ध्यान करें –

ॐ श्वेतः श्वेताम्बरधर किरीटि च चतुर्भुजः।
दैत्यगुरुः प्रशान्तश्च साक्षसूत्र कमण्डलुः॥

उपरोक्त प्रकार से ध्यान के बाद मुद्रिका को यंत्र के मध्य में रख दें। फिर कुंकुम से यंत्र पर निम्न मंत्र बोलते हुए सात बार तिलक करें –

ॐ भाग्यदाय नमः पाद्यं समर्पयामि।
ॐ शुभदाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ दैत्यगुरवे नमः स्नानं समर्पयामि।
ॐ भोगकराय नमः गन्धं समर्पयामि।
ॐ श्वेताम्बराय नमः धूपं दीपं दर्शयामि।
ॐ सर्वैश्वर प्रदाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
ॐ शुक्राय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

इसके बाद **'सफेद हकीक माला'** से निम्न मंत्र का 7 माला जप करें –

शुक्र साधना मंत्र

॥ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः॥

नित्य मंत्र जप के बाद यंत्र के समक्ष हाथ जोड़कर शुक्र स्तोत्र का पाठ करें। इस साधना को तीन बार अवश्य सम्पन्न करना है। साधना समाप्ति पर सफेद वस्त्र एवं चावल किसी को दान में देना लाभप्रद होता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौछावर – 600/-

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा

शुक्र की शुभता से साधक को जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी कुछ मिल जाता है। ऐसी है, शुक्र की माया जिससे साधक और जन-साधारण कोई भी नहीं बच पाता है।

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा के द्वारा मनुष्य की सभी भोग-विलासमयी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति में मुख में तेज और मादकता छलक उठती है और वह अपने सौन्दर्य से किसी को भी अपने तेज से सम्मोहित-आकर्षित कर सकते है। सौन्दर्य-आकर्षण, प्रेम, सम्मोहन का प्रतीक शुक्र ही है, शुक्र का प्रभाव मनुष्यों पर सामान्यतः देखा जा सकता है। समाज में नीरसता को दूर कर सरसता पैदा करना, आलस्य और कुण्ठा को समाप्त कर उत्साह और उमंग पैदा करना तथा किसी को सार्थक कार्य करने के लिए प्रेरित कर देना यह क्षमता शुक्र की अनुकूलता से ही संभव है।

सद्गुरुदेव से सात चरण में प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा प्राप्त कर मंत्र जप करने से शुक्र की प्रबलता साधक को अवश्य ही प्राप्त होती है और साधक के जीवन में सम्मोहन और आकर्षण के प्रभाव से सर्व कार्य सिद्ध होने लग जाते है।

– प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. – 3100/-